ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

गाँधी जी के विचारों के विभिन्न आयाम

Different Dimensions of Gandhiji's thoughts

Paper Submission: 12/09/2020, Date of Acceptance: 27/09/2020, Date of Publication: 28/09/2020

शहनवाज जहाँ
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
मुमताज पी.जी. कालेज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

नूर बानो
प्रवक्ता पुस्तकालय,
मुमताज पी.जी. कालेज,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

इस लेख के अंतर्गत लेखक ने महात्मा गाँधी जी के जीवन के आदर्शों, मूल्यों, नैतिकता, विचारों, विशेष रूप से राम राज्य, स्त्रियाँ, उनकी स्थिति, उनमे जागरण, स्वदेशी, गरीबी, धर्म, भारतीयता, अहिंसा, नारी दृष्टिकोण, नारी सशक्तिकरण, खादी, चरखा, तकली इत्यादि विषयों पर गाँधी जी के विचारों को इस लेख के माध्यम से जन समुदाय तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

In this article, the author has written the ideals, values, morals, ideas of Mahatma Gandhi's life, especially Ram Rajya, women, their status, awakening in them, Swadeshi, poverty, religion, Indianness, non-violence, women's outlook, women's empowerment, Through this article, Gandhiji's views on the subjects of Khadi, Charkha, Tikli etc. have been tried to reach the masses.

मुख्य शब्द : महात्मा गाँधी, विचार, राम राज्य, स्वदेशी, अहिंसा, खादी, चरखा, तकली, धर्म ।

Mahatma Gandhi, Idea, Ram Rajya, Swadeshi, Ahimsa, Khadi, Charkha, Takli, Religion.

प्रस्तावना

''भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है, योग भूमि नहीं।''

भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षायें रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिये जो कुछ चाहिये, वह सब उसे भारत में मिल सकता है।[1] गाँधी जी का यह सोचना पूर्णतया सत्य था कि किसी भी व्यक्ति ds जीवन यापन करने के लिये उपयोग में लाने वाली तथा सभी मनोकांक्षाओं को पूरी करने वाली सभी चीजों की पूर्ति भारतवर्ष में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, जिसके उपभोग या उपयोग से मनुष्य अपना जीवन सदा सुखमय व्यतीत कर सकता है। वे कहते हैं भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है, योग भूमि नहीं। [2]

गाँधी जी का आगमन भारत में ताजा हवा के एक ऐसे झोंके के समान था जिसने फैलकर हमे गहरी साँस लेने के लिये प्रेरित किया हम कह सकते हैं कि वह ऊपर से अवतरित नहीं हुये बल्कि वे भारत की करोड़ों की आबादी के बीच से निकलकर आये थे वे भारतीयों की भाषा बोलते तथा यहाँ की जनता की दयनीय स्थिति उन्हें उद्वेलित करती थी उनकी शिक्षा का सार था ''निभर्यता और सत्य और उनसे जुड़ा हुआ कर्म। वे हमेशा–हमेशा सामान्य जनता की खुशहाली पर नजर रखते थे।''[3]

भारत दुनिया के उन गिने देशों में से है जिन्होंने अपनी अधिकांश (पुरानी संस्थाओं को ;यद्यपि उन पर अन्धविश्वास और भूल–भ्रान्तियों की काई चढ़ गयी है,) कायम रखा है। साथ ही वह अभी तक अन्धविश्वास और भूल–भ्रान्तियों की इस काई को दूर करने की और इस तरह अपना शुद्ध रूप प्रकट करने की अपनी सहज क्षमता भी प्रकट करता है। उसके लाखों–करोड़ों निवासियों के सामने जो आर्थिक कठिनाइयाँ खड़ी हैं, उन्हें सुलझा सकने की उसकी योग्यता में मेरा विश्वास इतना उज्ज्वल कभी नहीं रहा जितना आज है।[4]

भारतीय समाज का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो गाँधी जी की दृष्टि से ओझल हो सके, किसान आन्दोलन गरीबों एवं भूखों को भोजन, गृहस्थ जीवन, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना महिलाओं, चरखा, तकली, खादी, धर्म रामराज्य, राजनीति, छुआ–छूतए करुणा सभी पर अपने भावों एवं विचारों को प्रस्तुत किया है तथा समाज के सामने एक आदर्श स्थापित किया है।

रामराज्य की अवधारणा

रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी के राम राज्य के बारे में कहते है–

''दैहिक–दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा।[5]''
''सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।'[6]

गाँधी जी हरिजन में लिखते हैं कि ''मैं स्वयं बचपन से तुलसीदास का भक्त रहा हूँ। अतः मैंने सदा ईश्वर के राम के नाम को पूजा है [7] गाँधी जी रामराज्य को स्पष्ट करते हुये कहते हैं'' ''रामराज्य से मेरा अभिप्राय है ''दैवी राज्य अर्थात ईश्वर का साम्राज्य। मेरी दृष्टि से राम और रहीम एक ही हैं। मैं केवल एक ही ईश्वर को जानता हूँ और वह है सत्य और सदाचार का ईश्वर।'[8]

गांधी जी यंग इण्डिया में लिखते हैं रामराज्य का प्राचीन आदर्श निस्सन्देह एक सच्चा लोकतंत्र है, जिसमें शुद्धतम नागरिक भी और महसी प्रक्रिया के बिना शीघ्र न्याय पा सकता है। कवि के वर्णन के अनुसार राजराज्य में कुत्ते को भी न्याय मिला था–[9] अपनी आत्मकथा में बापू ने लिखा है कि ''मेरे सपने के राजराज्य में राजा और रंक दोनों के अधिकार समान होते है। सच्चे अर्थों में यही लोकतन्त्र है परन्तु आजकल के दौर में यह दिखाई नहीं देता है। गाँधी जी ने प्लेटो के ही समान दो आदर्शों का वर्णन किया। प्रथम पूर्ण आदर्श, जिसे वह राम राज्य कहते और द्वितीय उपआदर्श जिसे वह अहिंसात्मक समाज कहकर पुकारते हैं। उनके पूर्ण आदर्श सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य के लिये कोई स्थान नहीं है। वह राज्यविहीन समाज (Stateless Society) की स्थापना करना चाहते हैं, जिसमें सब व्यक्ति सामाजिक जीवन का अपनी इच्छा से नियमन करते हें, मनुष्यों का इतना अधिक विकास हो जाता है कि वह अपने कर्तव्यों और नियमों का स्वेच्छापूर्वक पालन करते हैं।''[10]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गाँधी का राम राज्य एक अच्छे राज्य की संकल्पना है भारत में इसकी आवश्यकता है। यदि यह लागू हो जाये तो सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा। 20 मार्च 1939 में हिन्दी पत्रिका नवजीवन में 'स्वराज्य और रामराज्य' शीर्षक से एक लेख लिखा, इसमें लिखते हैं ''स्वराज्य के कितने ही अर्थ क्यों न किये जायें, तो भी मेरे नजदीक तो उसका त्रिकाल सत्य एक ही अर्थ है, और वह है राम राज्य । यदि किसी को राज राज्य बुरा लगे तो में उसे धर्म राज्य कहूँगा। रामराज्य शब्द का भावार्थ यह है कि उसमें गरीबों की सम्पूर्ण रक्षा होगी, सब कार्य धर्मपूर्वक किये जायेंगे और लोकमत का हमेशा आदर किया जायेगा ''[11]

अहिंसा

अहिंसा एक उच्चकोटि की सक्रिय शक्ति है यह आत्मबल या हमारे अन्दर बैठे ईश्वर का बल है। अपूर्ण मानव उस सम्पूर्ण तत्व को हृदयंगम नहीं कर सकता . . . . .जिस व्यक्ति में अभिमान और अहंकार है उसमें अहिंसा नहीं हो सकती नम्रता के बिना अहिंसा असम्भव हैं जहाँ प्रेम है, वहीं जीवन है। घृणा विनाश की जननी है, दुनिया में प्रेम सबसे बड़ी शक्ति है, साथ ही यह सबसे अधिक विनम्र है। मेरे पास प्रेम के अतिरिक्त और कोई शक्ति, कोई अधिकार नहीं है मैं कल्पना लोक में विचरण करने वाला आदमी नहीं हूँ मैं एक व्यावहारिक आदर्शवादी हूँ[12]

गाँधी जी हिंसा को पशुओं का धर्म मानते थे और अहिंसा को मनुष्यों का धर्म। हिंसा के द्वारा कोई भी स्थाई चीज खड़ी नहीं की जा सकती है। ''इतिहास इस सच्चाई के चाहे जितने प्रमाण दे सकता है कि पशुबल आत्मबल की तुलना में कुछ नहीं है। कवियों ने इस बल की विजय के गीत गाये हैं और ऋषियों ने इस विषय में अपने अनुभवों का वर्णन करके उसकी त्रुटि की है[13]

मेरा जीवन अहिंसा धर्म के पालन द्वारा भारत की सेवा के लिये समर्पित है। गाँधी जी अपने सपनों के भारत की सेवाए अहिंसा–धर्म के भाव व विचारों से करना चाहते हैं[14] इन दोनों शब्दों को वह एक ही अर्थ के लिये भाव अदल–बदल कर प्रयोग करते हैं। उन्होंने हर उस सिद्धान्त और व्यवहार को अस्वीकार किया था। जो उनकी आदर्शवादी सोच से मेल नहीं खाता था। नैतिक मूल्यों की महत्ता का प्रतिपादन उनका मुख्य लक्ष्य था।

''यदि भारत ने हिंसा को अपना धर्म स्वीकार कर लिया और यदि उस समय मैं जीवित रहा, तो भारत में नहीं रहना चाहूँगा। तब वह मेरे मन में गर्व की भावना उत्पन्न नहीं करेगा। मेरा देश प्रेम मेरे धर्म द्वारा नियंत्रित है मैं भारत से उसी तरह बंधा हुआ हूँ, जिस तरह कोई बालक अपनी माँ की छाती से चिपटा रहता है। क्योंकि मैं महसूस करता हूँ कि वह मुझे मेरा आवश्यक आध्यात्मिक पोषण देता है। उसके वातावरण से मुझे अपनी उच्चतम आकांक्षाओं की पुकार का उत्तर मिलता है यदि किसी कारण मेरा यह विश्वास हिल जाये या चला जाय, तो मेरी दशा उस अनाथ के जैसी होगी जिसे अपना पालक पाने की आशा ही न रही हो। ''[15]

धर्म

गांधी जी मूलतः धर्मपरायण व्यक्ति थे वे अपने अंतर मन की गहराइयों तक हिन्दू थे लेकिन धर्म सम्बन्धी उनकी अवधारणा का किसी सिद्धान्त, परम्परा या कर्मकाण्ड से कोई सम्बन्ध नहीं है, ''धर्म से मेरा अभिप्राय औपचारिक या रूढ़िगत धर्म से नहीं परन्तु उस धर्म से है जो सब धर्मों की बुनियाद है और वो हमे अपने सृजनहार का साक्षात्कार कराता है . . . . . धर्म हमारे हर काम में समाया हुआ होना चाहिये यहाँ धर्म का अर्थ सम्प्रदायवाद नहीं है, यह धर्म हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाईयत से परे है– गांधी धर्म मूलतः मानवतावादी है उसका चरम लक्ष्य मानव सेवा है गाँधी धर्म के प्रमुख तत्व है सत्य और प्रेम अथवा अहिंसा। ये व्यक्ति के दैहिक–मानसिक और आचरणात्मक पक्षों को धर्म से संयुक्त करते हैं। उनकी निष्ठा धर्मानुप्राणित व्यक्तित्त्व में है।[16] उनकी हिन्दू धर्म में गहन आस्था थी वह परम्परावादी हिन्दू, पर रूढ़िवादी नहीं थे लोकमंगल उनकी दृष्टि में सदैव बना रहा उनके विचारों पर मानस, सूरसागर, भगवतगीता, नरसिंह मेहता, कबीर, महामति, प्राणनाथ आदि का प्रबल प्रभाव था वे सहजता, ग्रामीणता, कुटीर उद्योग स्वावलम्बी जीवन, श्रमशील आचरण और सर्वोदयी विचार के थै सर्वहारा वर्ग के लिये बहुत कुछ किया है वह मनए वचन और कर्म से

पूर्ण रूपेण भारतीय थे उनके पीछे चलने वालों की कमी न थी सोहन लाल द्विवेदी कहते हैं.....

चल पड़े कदम दो डग–मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गांधी जिधर की दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर

नारी दृष्टिकोण

गाँधी जी ने रोजमर्रा की जिन्दगी से जूझती नारी की मूलभूत समस्याओं और विचारों को उठाया वे नारी के जीवन में सुधार लाना चाहते थे उनके विचार, कर्म और लेखन में स्त्री सशक्तीकरण दृढ़ता से प्रतिफलित हुआ है, हिन्दी साहित्य का भारतेन्दुयुग द्विवेदी युग और छायावाद और गाँधी जी के समय का एक ही एजेण्डा था–नारी जागरण। इस समय उनके उद्धार के लिये अनेक कार्यक्रम चलाये गये ''गाँधी जी स्त्रियों को सलाह देते हुये कहते है कि वे सभी अवांछनीय और निकम्मी बंदिषो के खिलाफ विद्रोह करे बंदिषे वे ही फायदा पहुँचा सकती है जो स्वैच्छिक हो। सविनय विद्रोह से कोई हानि होने की आंशका नहीं है, क्योंकि उसके मूल में शुद्धता और सुविवेचित प्रतिरोध होते हैं'' [17]

वह नारी को नर की पूरक मानते हुये उनकी मानसिक क्षमता को बराबर मानते थे नारी को अबल कहने का वो विरोध करते हुए कहते हैं ''नारी को अबल कहना उसकी निन्दा करना है यह पुरुष का नारी के प्रति अन्याय है। यदि शक्ति का अर्थ पाशविक शक्ति हैं तो सचमुच पुरुष की तुलना में स्त्री पाशविकता कम है। और यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है तो स्त्री निश्चित रूप से पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक श्रेष्ठ है, क्या उसमें पुरुष की अपेक्षा अधिक अंतःप्रज्ञाए अधिक आत्म त्याग, अधिक सहिष्णुता और अधिक साहस नहीं हैघ उसके बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है। यदि अहिंसा मानव जाति का नियम है तो भविष्य नारी जाति के हाथ में है . . . . . हृदय को आकर्षित करने का गुण स्त्री से ज्यादा और किस में हो सकता है [18] ''वे नारी को त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति मानते थे 'अहिंसा का मतलब है असीम प्रेम । और असीम प्रेम का अर्थ है कष्ट सहने की असीम क्षमता। इस क्षमता का सबसे अधिक परिचय नारी– पुरुष की जननी– ही देती है'' उनका ख्याल था कि हिन्दू संस्कृति में एक दोष यह रहा है कि उसने 'पत्नी को पति की दासी के स्थान पर ला रखा है और पत्नी द्वारा अपना समस्त अस्तित्व पति में विलीन कर देने का आग्रह किया है परिणमतः पति कभी–कभी पत्नी के अधिकारों को इस तरह हड़प लेता है और उस पर इतना रोब जमाता है कि वह वास्तव में पशु के समान बन जाता है''[19]

गाँधी जी का दृढ़ विश्वास था कि स्त्री कोई कठपुतली नहीं है जो पुरुष के इशारे पर नाचती रहे ''इस देश की सही शिक्षा यह होगी कि स्त्री को अपने पति से भी 'न' कहने की कला सिखायी जाये और उसे यह बताया जाय कि वह अपने पति की कठपुतली या उसके हाथों की गुड़िया बनकर रहना उसके कर्त्तव्य का अंग नहीं है, उसके अपने अधिकार और अपने कर्त्तव्य हैं''[20]

नारी सशक्तीकरण गाँधी जी की दृष्टि में एक अनिवार्य चीज है गाँधी जी स्त्रियों के प्रति समानता, सहयोग, स्वतन्त्रता के विचार रखते हुये उन्हें समाज का अनिवार्य अंग मानते है स्त्री अधिकारों की बात करते हुये गांधी जी का मानना है'' पारिवारिक सम्पत्ति में बेटा और बेटी दोनों का एक समान हक होना चाहिये। उसी प्रकार पति की आमदनी को पति और पत्नी की सामूहिक संपत्ति समझा जाना चाहिए क्योंकि इस आमदनी के अर्जन में स्त्री का भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान रहता है [21]

हरिजन पत्रिका में गांधी जी लैंगिक विरोध सम्बन्ध को व्यक्त करते हैं ''लैंगिकता के विषय में गाँधी जी के विचारों ने एक ऐसा सामाजिक माहौल बनाने में मदद की जहाँ महिलायें अपने घर से बाहर सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों एवं संघर्षों में बिना किसी भय एवं शर्म के हिस्सा ले सकती थी। ब्रह्मचर्य को शादी से ज्यादा महत्व देकर गांधी जी ने कई महिलाओं के लिये अविवाहित रहकर इज्जत के साथ समाज में जीना सम्भव कर दिया। गाँधी जी ने यह भी प्रयास किया कि पुरुष और महिला के बीच आदर्श रिश्ता जो आश्रम में अनुसरण किया जा रहा था, वही राष्ट्रीय आन्दोलन में भी निभाया जाये।[22]

गांधी जी मानते थे कि स्त्री पुरुष दोनों एक समाज में रहते हुये एक जैसा जीवन व्यतीत करते हैं दोनों की भावनायें एक है तथा दोनों एक दूसरे की पूरक शक्ति है वह स्त्रियों को त्याग एवं अहिंसा की अवतारणा होती है। स्त्री एवं पुरुष दोनों की समुचित शिक्षा के हिमायती रहे हैं। गांधी जी की प्रेरणा से राष्ट्रीय आन्दोलनों में अनेक महिलाओं ने भागीदारी की है, उनका मानना है कि ''स्त्रियाँ किसी भी दृश्टि से पुरुशों से हीन नही होती और स्त्रियों को कमजोर कहना उसके प्रति अन्याय और उसका अपमान है उनका कथन था कि यदि सत्य, अहिंसाए सहिष्णुता और नैतिकता आदि को जीवन के सर्वोच्च गुणों की दृष्टि से विचार किया जाय तो स्त्रियाँ पुरुषों से श्रेष्ठ हैं''[23]

खादी, चरखा, तकली

''खादी केवल वस्त्र ही नहीं बल्कि विचार है'' तथा चरखा चलाते हुये ए सूत कातते हुये जो छवि सामने आती है वह गांधी जी के चरखा और खादी के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है 'खादी का जन्म' शीर्षक में गाँधी जी लिखते– ''मुझे याद नहीं पड़ता कि सन् 1908 तक मैंने चरखा या करघा कहीं देखा हो, फिर भी मैंने हिन्द स्वराज्य में यह माना था कि चरखे के जरिये हिन्दुस्तान की कंगालियत मिट सकती है और यह तो सबके समझ सकने जैसी बात है कि जिस रास्ते भुखमरी मिटेगी उसी रास्ते स्वराज्य मिलेगा।''[24] चरखा एक समाजोपयोगी यन्त्र है, इसके विषय में गाँधी जी कहते हैं ''इससे हिन्दुस्तान की भूखों मरने वाली अर्ध–बेकार स्त्रियों को काम दिया जा सकता है, उनका काता हुआ सूत बुनवाना और उनकी खादी लोगों को पहनना, यही मेरा विचार है यही मेरा आन्दोलन है। मैं नहीं जानता कि चरखा आन्दोलन कहाँ तक सफल होगा अभी तो उसका आरम्भकाल है पर मुझे उसमें सफलता मिलेगी इसका मुझे पूर्ण विश्वास है।''[25]

गाँधी जी खादी और चरखे के साथ तकली को भी उपयोगी मानते थे यह बहुत ही सस्ता यन्त्र है, वे कहते हैं, ''तकली गरीब लोगों का यन्त्र है, उनका आश्रय

है जिस प्रकार हल अन्न का साधन है उसी प्रकार तकली वस्त्र का साधन है तकली से ही मिलों की उत्पत्ति हुई है। 'स्पिनिंग मिल' अर्थात् तकली मिल। जिस तरह एक मनुष्य दूसरे घरों के पाइप को बन्द कर उन्हें अपने घरा में इकट्ठा कर लें तो वह अन्य सब लोगों को पानी के लिये पराधीन कर देगा। उसी तरह स्पिनिंग मिल भी जुदा–जुदा तकलियों को इकट्ठा कर स्वतन्त्र रूप से कातने वाले लोगों को पराधीन कर देती है इस तरह देखें तो तकली स्वतन्त्रता का प्रतीक है और मिल परतन्त्रता का। ऐसी लाभकारी वस्तु का तिरस्कार किस लिये? इस छोटी वस्तु की शक्ति को समझना हमारा धर्म है। तकली और चरखा दोनों तन ढ़कने के साथ पोषण करते हैं, इसलिये मैंने इन्हें अन्नपूर्णा की उपमा दी है।''[26]

उन्होंने खादी को अपने जीवन का अहम् हिस्सा बनाया। आज खादी आकर्षक एवं लुभावने रूप में बाजार में अपनी महत्ता को दर्शाते हुये देश–विदेश के लोगों को आकर्षित कर रही है। साथ ही साथ गाँधी जी ने स्वदेशी पर बल दिया उनका एकादश व्रत : सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, अभय, सर्वधम्र असमानता, स्वदेशी, अस्पृश्यता सभी पर अपने विचार प्रस्तुत किये थे। हमारे समाज के लिये आज भी आदर्श प्रस्तुत करते हैं बुनियादी शिक्षा, सर्वधर्म सम्भाव, स्वच्छता और स्वास्थ्यए नशामुक्ति, राष्ट्रभाषा–मातृभाषा तथा ग्रामोद्योग आदि महत्वपूर्ण विचारों को उन्होंने हम सबके सम्मुख रखा'' परन्तु सबको एक लेख में लिखना सम्भव नहीं बल्कि गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन तथा विचार सदैव हम सब के लिये अनुकरणीय है, रंग–भेद, लिंग–भेद, धर्म–भेद, ऊँच–नीच का भाव विषमता को कम करने तथा मिटाने का तरीका गाँधी जी ने सिखाया।

खान अब्दुल गफ्फार खान के शब्दों में ''महात्मा गांधी देश और दुनिया को अँधेरे (विनाश) से उबारने वाली रोशनी की इकलौती किरण थे।''

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य है गाँधी जी के विभिन्न विचारों तथा उनके विभिन्न आयामों को लोगो के समक्ष रखना तथा गाँधी जी १५०वी वर्ष गाँठ पर गाँधी जी को ह्रदय से श्रद्धांजलि देना तथा उनके विचारो को पुनः याद दिलाना।

निष्कर्ष

'सादा जीवन एवं उच्च विचार' के सिद्धांत को आजीवन लागू करने वाले बापू के विचारए रहन सहन से सम्पूर्ण भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व के करोड़ो लोग प्रभावित हैं गाँधी जी के मौलिक विचारो (अहिंसा, धर्म, स्वराज, नारी दृष्टिकोण, खादी, चरखा, तकली, रामराज्य)" को मूल रूप में जन सामान्य के समक्ष रखने का प्रयास ही इस शोध पत्र में किया गया है

खान अब्दुल गफ्फार खान के शब्दों में ''महात्मा गांधी देश और दुनिया को अँधेरे (विनाश) से उबारने वाली रोशनी की इकलौती किरण थे।''

सन्दर्भ ग्रन्थ रूची

1. *यंग इंडिया 21/2/1929*
2. *यंग इंडिया 5/2/1925*
3. *भारत की खोज NCERT Page no- 107*
4. *यंग इंडिया 6/8/1929*
5. *रामचरित मानस उत्तरकाण्ड 20/1.तुलसीदास*
6. *रामचरित मानस उत्तरकाण्ड 20/2 .तुलसीदास*
7. *हरिजन 24/3/1946 पेज नंबर. 56*
8. *महात्मा गाँधी के विचार. प्रभु एवं राव नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया 1994 पेज नंबर 314*
9. *यंग इंडिया 9/9/1929 पेज नंबर 305*
10. *भारतीय राजनितिक चिंतन. बी एल फडिया पेज नंबर 205.206*
11. *नवजीवन 20 मार्च 1930*
12. *महात्मा गाँधी का सन्देश संकलन एवं संपादन यू एस मोहनराव पेज नंबर 31.32*
13. *Speeches and writing of Mahatma Gandhi page number 405*
14. *यंग इंडिया 19/8/1920*
15. *यंग इंडिया 6/4/1921*
16. *भारतीय राजनीतिक चिंतन डॉण् बी एल फडिया पेज नंबर 174*
17. *गाँधी अध्ययनण् ओरिएंट ब्लैक Loku, manoj sinha, दूसरा संस्करण, page no. 122*
18. *यंग इंडिया 10/4/1930 पेज नंबर 121*
19. *महात्मा गाँधी का सन्देश संकलन एवं संपादन यू एस मोहनराव page no.15*
20. *हरिजन 2/5/1936 पेज नंबर 93*
21. *नवजीवन 13/7/1924 वॉल्यूम 24 पेज नंबर 371. 372*
22. *गाँधी अध्ययन मनोज सिन्हा पेज नंबर 127*
23. *भारतीय राजनीतिक चिंतन डॉ. बी एल फडिया पेज नंबर 216*
24. *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा एम् के गाँधी page no. 42*
25. *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा एम् के गाँधी page no.447*
26. *सम्पूर्ण गाँधी वांग्यमय 32* page no. 381-382.